Research Paper E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 3 | ISSUE : 2 | FEB 2017

ह्वेनसांग का विवरण

डॉ॰ कमलाकान्त सिंह [1]

[1] प्राचार्य, इतिहास विभाग, शिवपूजन शास्त्री समता महाविद्यालय, दिनारा (रोहतास), वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा (बिहार)

ABSTRACT

Keywords:

ह्वेनसांग का चीन से भारत आनेवाले यात्रियों में महत्वपूर्ण स्थान है। उसने बौद्ध धर्मस्थानों की यात्रा कर भगवान बुद्ध के जीवन के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त करने के उद्देश्य से भारत की यात्रा की थी। अपने 13–14 वर्ष के प्रवासकाल में उसने कपिसा से ताम्रलिप्ति तक की पैदल यात्रा को और भारतीय सभ्यता के विविध पहलुओं की जानकारी हासिल की। उसकी यात्रा का विवरण 'सी यू की' नामक ग्रंथ के रूप में प्रकट हुआ। यह ग्रंथ सच्ची सूचनाओं के ऊपर आधारित है। इस ग्रंथ ने भारत के तत्कालीन लुप्त इतिहास को प्रकाशित किया है जो अभी तक किसी पुरातात्विक खोज द्वारा भी उजागर नहीं की जा सकी है। हर्षकालीन भारतीय इतिहास ह्वेनसांग के विवरण के बिना अधूरा है।

ह्वेनसांग का जन्म 600 ई॰ में चीन के होनान्–फू के निकट स्थित चिनल्यू नामक नगर में हुआ था। उसके पिता का नाम हुइ था। 13 वर्ष की उम्र में वह बौद्ध धर्म में दीक्षित हुआ और 20 वर्ष का होते–होते बौद्ध भिक्षु बन गया। बौद्ध साहित्य के अध्ययन के क्रम में अपनी शंकाओं के निराकरणार्थ उसने 29 वर्ष की उम्र में भारत की यात्रा की। वह 629 ई॰ में चीन से भारत के लिए चला। तूरान, कूचा, ताशकन्द, समरकन्द, काबुल, पेशावर होते हुए सिन्धु नदी को पार कर वह 630 ई॰ में तक्षशिला पहुँचा। तक्षशिला से 633 ई॰ में ह्वेनसांग कश्मीर पहुँचा। कश्मीर एक प्रमुख बौद्ध केन्द्र था। कश्मीर से ही हर्ष के आमंत्रण पर हुएनसांग कन्नौज गया। कन्नौज की महासभा में उसे 'महायान देव' की उपाधि से विभूषित किया गया। कन्नौज से वह पाटलिपुत्र होते हुए नालन्दा पहुँचा जहाँ उसने छह वर्षों तक बौद्ध धर्म ग्रंथों का अध्ययन किया। नालन्दा से बंगाल होते हुए 644 ई॰ में वह अपने देश चीन वापस लौट गया। चीन जाकर उसने अपने भारत यात्रा का विवरण 'सी यू की' नामक ग्रंथ के रूप में लिपिबद्ध किया।[1]

ह्वेनसांग की यात्रा विवरण से उत्तर भारत के सातवीं सदी के भौगोलिक स्थिति और नगरों का ज्ञान प्राप्त होता है। ह्वेनसांग ने भारत में काश्मीर से काँजीवरम् तक की यात्रा पैदल ही पूरी की। इस यात्रा के दौरान वह स्थल मार्ग से कन्नौज, अयोध्या, प्रयाग, श्रावस्ती, कुशीनगर, वाराणसी, सारनाथ, वैशाली, पाटलिपुत्र, राजगीर, नालन्दा, आसाम, उड़ीसा एवं ताम्रलिप्ति गया। इन तमाम स्थानों के परिभ्रमण करने के साथ–साथ ह्वेनसांग ने एक–दूसरे के बीच की दूरी का भी वर्णन किया है। उसने लिखा है कि भारत तीन ओर से समुद्र से घिरा है और इसके उत्तर में बर्फीले पहाड़ हैं। इस देश का आकार अर्द्धचंद्राकार है। यहाँ 70 राज्य हैं। यहाँ की जलवायु उष्ण है। इस देश में प्रचुर मात्रा में पानी उपलब्ध है। इस देश के मैदानी भाग एवं घाटियाँ उर्वरता के लिए प्रसिद्ध हैं। इस देश का पश्चिमी भाग पठारी और बीहड़ जंगलों से युक्त है। ह्वेनसांग ने यात्रा के दौरान प्रमुख नगरों का भी अध्ययन किया। उसने पाया कि नगर के चारों ओर दवाजे होते हैं। नगरों की सड़कें टेढ़ी–मेढ़ी और गंदी होती थी। नगर के मध्यवर्ती हिस्सों में सवर्ण हिन्दू लोग रहते थे। बूचड़, मछुए, भंगी, चाण्डाल आदि का निवास स्थान नगर के बार होता था। ये लोग शहर में हमेशा सड़क पर बायीं ओर चलते थे। ह्वेनसांग द्वारा प्रस्तुत भौगोलिक विवरण के आधार पर ही जनरल ए॰ कनिंघम ने 1874 से 1884 के बीच तक्षशिला से बंगाल के बीच स्थित पन्द्रह जिलों का प्रतिवेदन प्रकाशित किया था। बाद में उन्होंने ह्वेनसांग के यात्रा वृत्तान्त के आधार पर 'ऐन्सिएण्ट ज्योग्राफी ऑफ इण्डिया' नामक ग्रंथ की रचना की। इस प्रकार हुएनसांग का यात्रा वृत्तान्त तत्कालीन भौगोलिक स्थिति की जानकारी देनेवाला प्रमुख ग्रंथ है।

भारत का वर्णन करते हुए ह्वेनसांग लिखता है कि भारत ब्राह्मणों का देश है। उसने लिखा है कि इस देश में आदिकाल से ही चार जातियाँ–ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र चली आ रही हैं। ये भी कई जातियों और उपजातियों में बँटे होते थे। ब्राह्मण अपनी शुद्धता, सदाचार और धार्मिकता के कारण श्रेष्ठ समझे जाते थे। क्षत्रिय वर्ग का मुख्य कार्य शासन करना था। वैश्य वर्ग व्यवसाय व्यापार में संलग्न रहता था। उन तीनों वर्ग के लोग समृद्ध थे। चौथे वर्ग शूद्र का मुख्य काम तोनों वर्गों की सेवा करना था। इस वर्ग में निषाद, पारसद, पुन्कुस वर्णशंकर जाति थी। चाण्डाल, भक्त, कसाई, मछुआ और जल्लाद अंत्यज्य जातियाँ थी। साधारणतया विवाह अपनी ही जातियों में किये जाते थे। स्त्रियाँ सामान्यतः एक ही विवाह करती थी। प्रथम तीन वर्णों में विधवा–विवाह का प्रचलन नहीं था। अनुलोम और प्रतिलोम विवाह से उत्पन्न संतानें वर्ण संकर की कोटि में रखी जाती थी। हुएनसांग द्वारा वर्णित यह सामाजिक अवस्था स्मृतियों में वर्णित सामाजिक विधानों से ही मिलती–जुलती है।

ह्वेनसांग ने भारतीयों के रहन–सहन, वस्त्र एवं भोजन पर भी प्रकाश डाला है। उच्च वर्ण के लोगों का भोजन रहन–सहन सात्विक और साधारण था। ये माँस, मदिरा, लहसुन आदि से परहेज करते थे। केवल क्षत्रिय और शूद्र माँस और मदिरा का प्रयोग करते थे। क्षत्रिय अंगूर और गन्ने से बनी मदिरा का उपयोग करते थे। सूती, रेशमी और ऊनी सभी प्रकार के वस्त्रों का उपयोग होता था किन्तु वस्त्र सिले हुए नहीं होते थे। पुरुष धोती और कंधे पर छोटी चादर डालते थे। स्त्रियों के सिर साड़ी से ढँके होते थे। समृद्ध वर्ग के वस्त्र मूल्यवान होते थे। साधारण भारतीय प्रायः सफेद वस्त्र धारण करते थे। विधवाओं के भी वस्त्र सादे होते थे और अल्प आहर ग्रहण करती थी।

ह्वेनसांग ने भारत के विभिनन प्रान्तों के निवासियों के स्वभाव का वर्णन किया है। उसके अनुसार काश्मीर के लोग भीरू एवं धोखेबाज होते थे। मथुरा शहर में विद्वानों और महात्माआ को सम्मान की दृष्टि से देखा जाता था। मालवा, मगध और पुण्ड्रवर्द्धन के लोगों का स्वभाव नम्र होता था। वे ज्ञान पिपासु होते थे। कामरूप वासी ईमानदार तो थे परन्तु वे असभ्य होते थे। कन्नौज वासी शालीन, शिष्ट और सभ्य होते थे। इसके विपरीत थानेश्वर के निवासियों की नजर में व्यभिचार को बुरा नहीं समझा जाता था। मध्यदेश में रहनेवाले लोगों की भाषा शुद्ध एवं उच्चारण मधुर होता था।[2]

ह्वेनसांग ने तत्कालीन भारतीय आर्थिक जीवन का विवरण प्रस्तुत किया है। भारत का एक खुशहाल एवं धनधान्य से पूर्ण देश था। यहाँ दरिद्रता का नामोनिशान भी नहीं था। कृषि एवं पशुपालन अर्थव्यवस्था के आधार थे। कृषि एवं पशुपालन का कार्य मुख्य रूप से शूद्रों द्वारा किया जाता था। वैश्य का जीवनयापन वाणिज्य एवं व्यापार द्वारा होता था। भारत से कपड़े, गर्म मशाले एवं हाथी दाँत से बनी वस्तुएँ निर्यात की जाती थी। गाँवों में वस्तु विनिमय प्रणाली का प्रचलन था और राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार हेतु सोने और चाँदी की मुद्राओं का उपयोग किया जाता था। ब्राह्मण दान से जीविकोपार्जन करते थे। उस समय लगने वाले करों की संख्या और उनकी दर दोनों ही कम थी। कर के रूप में उपज का छठा हिस्सा लिया जाता था। व्यापारियों और शिल्पियों से चुँगी भी वसूल की जाती थी। यद्यपि कर वसूलने में सखती नहीं की जाती थी परन्तु हुएनसांग ने किसानों से पाँच बोरा अनाज वसूलने का भी उल्लेख किया है।

हुएनसांग के विवरण से तत्कालीन शिक्षा एवं साहित्य की अवस्था की भी जानकारी मिलती है। उसके अनुसार 7 वर्ष की अवस्था में बालक को शब्द विद्या, चिकित्सा विद्या और आध्यात्म विद्या की शिक्षा के लिए गुरु आश्रम में भेज दिया जाता था। ब्राह्मण संस्कृत भाषा, यज्ञ, पूजा के मंत्रों एवं गूढ़ धर्मशास्त्रों के अध्ययन में विशेष रुचि लेते थे। सभी लोग गुरु का आदर करते थे एवं उन्हें श्रद्धा की दृष्टि से देखा जाता था। बौद्ध विहारों में भी शिक्षा देने को व्यवस्था थी। नालन्दा, वल्लभी और उज्जैन शिक्षा के प्रमुख केन्द्र थे। चूँकि हुएनसांग ने छह वर्षों तक नालन्दा विश्वविद्यालय में बौद्ध धर्म ग्रंथों का अध्ययन किया था, अतः उसने नालन्दा विश्वविद्यालय का विशद् वर्णन किया था। उसके समय में आचार्य शीलभद्र नालन्दा विश्वविद्यालय के महास्थाविर अर्थात् कुलपति थे। इस विश्वविद्यालय में 1500 आचार्य थे। यहाँ चीन, जापान, तिब्बत, कोरिया, मंगोलिया, श्रीलंका आदि देशों से अध्ययन के लिए बौद्ध भिक्षु आते थे। यहाँ 8500 छात्र अध्ययनरत थे। इस विश्वविद्यालय में कठिन प्रतियोगिता के बाद प्रवेश

मिलता था। यहाँ का पाठ्यक्रम बड़ा विशाल था। यहाँ बौद्ध दर्शन, व्याकरण, भाषा, चिकित्सा विज्ञान, शिल्प ज्ञान एवं दर्शनशास्त्र के पाठ्यक्रम का अध्ययन किया जाता था। यहाँ सात विहार और आठ व्याख्यान प्रकोष्ठ थे। शिक्षा की समाप्ति के बाद समावर्त्तन समारोह का आयोजन किया जाता था। हर्ष द्वारा इस विश्वविद्यालय में एक नौ मंजिला पुस्तकालय भी था। यह विश्वविद्यालय उस समय एक प्रतिष्ठित संस्थान था। यहाँ देश–विदेश से छात्र अपने शंका समाधान के लिए आते थे। इत्सिंग के अनुसार हुएनसांग से पहले तथा बाद के 40 वर्षों के बीच लगभग 56 विद्वान चीन, जापान और कोरिया से आये थे।[3]

ह्वेनसांग के विवरण से तत्कालीन भारतीय धार्मिक अवस्था की भी जानकारी प्राप्त होती है। गुप्त शासनकाल में पुनः प्रतिष्ठित हिन्दू धर्म या ब्राह्मण धर्म हर्ष के काल तक अत्यन्त दृढ़ रूप में स्थापित हो चुका था। हिन्दू धर्म में अनेक सम्प्रदाय थे जिनमें शैव सम्प्रदाय अत्यधिक लोकप्रिय था। वाराणसी में शैव सम्प्रदाय के 10,000 अनुयायी निवास करते थे। यहाँ पर शिव की 100 फीट ऊँची एक अत्यन्त विशाल मूर्ति का उल्लेख ह्वेनसांग ने किया है। इस समय शैव धर्म के अतिरिक्त वैष्णव धर्म के प्रति अनुराग बढ़ता जा रहा था। सूर्य पूजा भी प्रचलित थी। हर्ष स्वयं अन्त तक महात्मा बुद्ध और भोलेनाथ शंकर के साथ–साथ सूर्य की भी पूजा करता था। हिन्दू धर्म के विविध सम्प्रदायों के साथ लौकिक धर्म भी प्रचलित था। गंगा–स्नान एवं दान का विशेष महत्व था। लोग गंगा के पवित्र मानते थ। उनका विश्वास था कि गंगा–स्नान से सभी पाप नष्ट हो जाते हैं। प्रयाग में संगम में स्नान करने का तो विशेष महत्व ही था। दान की जनता के बीच महत्ता को ध्यान में रखते हुए हर्ष प्रत्येक पाँच वर्ष पर प्रयाग में एक माह का दान महोत्सव आयोजित करता था। वह अपनी समस्त आय दान कर देता था। हुएनसांग के अनुसार, हर्ष के छठे दान महोत्सव में पाँच लाख स्त्री–पुरुषों को दान दिया गया था।

सातवीं शताब्दी के भारत की प्रमुख विशेषता भिक्षु धर्म थी। परिवार और सम्पत्ति को त्याग कर ब्राह्मण, जैन एवं बौद्ध धर्म को मानने वाले लोग संन्यास धारण कर लेते थे। संन्यासी त्याग और तपस्या के लिए सुप्रसिद्ध थे। ये भिक्षु बनकर एक स्थान से दूसरे स्थान तक घूमते रहते थे। ये घूम–घूमकर धर्म और दर्शन के सिद्धान्तों को साधारण भाषा में लोगों तक पहुँचाकर अपने–अपने धर्मों का प्रचार–प्रसार करते थे। इससे सामान्य जन के बीच धार्मिक अभिरुचि उत्पन्न होती थी।[4]

ज्यों–ज्यों ब्राह्मण धर्म सुदृढ़ होता चला गया, त्यों–त्यों बौद्ध धर्म धीरे–धीरे पतन की ओर अग्रसर होता गया और जैन धर्म बंगाल, पंजाब और दक्षिण भारत के कुछ प्रदेशों तक ही सीमित हो गया। हुएनसांग ने हर्ष के समय के पूर्व के प्रसिद्ध बौद्ध स्थलों की जीर्णशीर्ण अवस्था का वर्णन किया है। उसने अपने विवरण में लिखा है कि प्रमुख नगरो में स्तूप और विहार की तुलना में देव मन्दिर अधिक संख्या में मौजूद थे। इस काल में बौद्ध धर्म 18 शाखाओं में बँट गया था। हीनयान की तुलना में महायान अधिक प्रचलित और लोकप्रिय था। हर्ष महायान सम्प्रदाय का अनुयायी था। विश्व विख्यात नालन्दा विश्वविद्यालय में भो महायान सम्प्रदाय को ही प्रधानता दी जाती थी। बौद्ध धर्म में अनेक कुरीतियाँ आ चुकी थी। बौद्धों में मूर्ति पूजा प्रचलित हो चुकी थी। बौद्ध विहार विलासिता के केन्द्र बन चुके थे। बौद्ध भिक्षुओं का चारित्रिक पतन शुरू हो चुका था। कुरीतियों एवं नैतिक पतन के कारण बौद्ध धर्म खोखला होता जा रहा था। इस अवनत अवस्था में भी ह्वेनसांग द्वारा उल्लिखित 5000 बौद्ध विहारों से यह सिद्ध होता है कि अभी भी बौद्ध धर्म भारत का एक प्रमुख धर्म था। नालन्दा महाविहार के अतिरिक्त नगरधन का विहार, कान्यकुब्ज का भद्र विहार और वैशाली का श्वेतपुर विहार उस समय के प्रसिद्ध स्थल थे।

ह्वेनसांग क विवरण से ज्ञात होता है कि हर्ष के काल में भारत में धार्मिक सहिष्णुता में कमी आती जा रही थी। गौड़ का शासक शासक बौद्ध धर्म का विरोधी था। पल्लव नरेश विक्रम जैन धर्म के विरोधी के रूप में जाना जाता था। हर्ष भी बौद्ध धर्म के प्रचार के अति उत्साह में कन्नौज में आयोजित बौद्ध महासभा के दौरान 500 ब्राह्मण पंडितों को बन्दी बनाकर अन्य धर्म के प्रति असहिष्णु बन गया था। इससे देश का धार्मिक वातावरण दूषित हो रहा था।

इस प्रकार हुएनसांग के विवरण से सातवीं सदी के पूर्वार्द्ध के भारतीय इतिहास की जानकारी मिलती है। किसी भी विदेशी यात्री के विवरण की तुलना में हुएनसांग का विवरण भारतीय इतिहास को अध्ययन की दृष्टि से बहुमूल्य है।[5]

REFERENCES

1. के॰ एम॰ पणिक्कर, ए सर्वे ऑफ इण्डियन हिस्ट्री, पृ॰ 79
2. विनोदचन्द्र सिन्हा, प्राचीन भारतीय इतिहास एवं राजनीतिक चिन्तन, पृ॰ 210
3. भी. ए. स्मिथ, अर्ली हिस्ट्री ऑफ इण्डिया, पृ॰ 14–15
4. यदुनन्दन कपूर, हर्ष, पृ॰ 198
5. के. एम. पणिक्कर, ए सर्वे ऑफ इण्डियन हिस्ट्री, पृ॰ 81